B.Com-II PLANNING & ECONOMIC DEVELOPMENT

By, Sujeet Kr. Suman
R. N. College
Hajipur

Q.No-2 → समाजवाद क्या है? इसके गुण - दोषों का विवरण दीजिए।

उत्तर

समाजवादी अर्थव्यवस्था पूँजीवादी अर्थव्यवस्था का विरोधाभास है तथा इसका उद्गम पूँजीवादी व्यवस्था की प्रतिक्रिया के फलस्वरूप हुआ है। समाजवादी व्यवस्था में मानवीय आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए राष्ट्रीय साधनों को विभिन्न कार्यों में इस प्रकार विभाजित किया जाता है कि प्रत्येक साधन से अधिकतम संतुष्टि प्राप्त हो सके। वस्तुतः 'समाजवाद' शब्द से सिद्धांत और राजनीतिक आन्दोलन दोनों का ही संकेत मिलता है। इसके अन्तर्गत केवल राजनीतिक सिद्धांत ही नहीं मिलते वरन् आर्थिक और राजनीतिक सिद्धांतो की एक मिश्रित विवेचना भी मिलती है।

प्रो० लैक्स और हुट के अनुसार, "समाजवाद एक आँदोलन है। जिसका उद्देश्य सभी प्रकार की प्राकृतिक और मानवीयकृत वस्तुओं का, जो विशालस्तरीय उत्पादन में प्रयोग किया जाता है, स्वामित्व और प्रबंध व्यक्तियों के स्थान पर समाज के हाथ में देना होता है ताकि व्यक्ति की आर्थिक प्रेरणा या उसकी व्यावसायिक एवं उपभोग- संबंधि चुनाव करने की स्वतंत्रता को नष्ट किये बिना ही, बढ़ती हुई राष्ट्रीय आय का अधिक समान वितरण संभव हो सके।"

समाजवाद के गुण (Merits of Socialism)

(a.) अधिक उत्पादन → समाजवाद के अन्तर्गत लाभ को ध्यान में रखकर उत्पादन नहीं किया जाता है, वरन् समाज की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर उत्पादन किया जाता है। इससे उत्पादन अधिक होता है।

(b.) आर्थिक साधनों का उचित प्रयोग → समाजवाद के अन्तर्गत देश के प्राकृतिक तथा आर्थिक साधनों का एक नियोजित तथा संतुलित रूप में उपयोग किया जाता है।

(C.) सामाजिक कल्याण में वृद्धि → समाजवाद में उन उत्पादनों तथा व्यवसाओं पर अधिक जोर दिया जाता है जिनसे समाज-कल्याण में वृद्धि होती हो और सामाजिक आवश्यकताओं की संतुष्टि की जाती हो।

Scanned with CamScanner

(d) बेकारी की समस्या का हल :→ समाजवाद में उत्पत्ति के साधनों व मानव-जीवन की विभिन्न वस्तुओं पर सरकार का नियंत्रण होता है अतः बेकारी का निराकरण हो जाता है।

~~(e.) धन का समान वितरण → समाजवाद में उत्पत्ति के साधनों व मानव-जीवन की विभिन्न~~

(e.) धन का समान वितरण → समाजवाद में सरकार के स्वामित्व में ही उत्पत्ति के साधनों का नियंत्रण और उनसे प्राप्त आय का वितरण भी सरकार के द्वारा होता है। अतः धन का समान वितरण होता है।

(f.) आर्थिक शोषण का अन्त → समाजवाद के अन्तर्गत कमजोर वर्ग का शोषण नहीं होता है। इसके अन्तर्गत प्रत्येक व्यक्ति अपनी योग्यता के अनुसार पाता है।

(g.) सामाजिक परजीविता का अन्त → समाजवाद के अन्तर्गत प्रत्येक व्यक्ति परिश्रम करके ही आय प्राप्त करता है और कोई भी व्यक्ति अर्जित आय से अपना जीवन-निर्वाह नहीं कर सकता।

* समाजवाद के दोष
Demerits of Socialism

(a) उत्पादन में कमी → समाजवाद में उद्योगों का प्रबंध, नियंत्रण तथा संचालन सरकारी कर्मचारियों द्वारा किया जाता है। किन्तु वे लोग इस कार्य में कुशल नहीं होते हैं जिससे उत्पादन में कमी आ जाती है।

(b) प्रबंध तथा शासन की कठिनाईयाँ → समाज में उद्योगों का प्रबंध तथा सरकारी प्रशासन कर्मचारियों द्वारा किया जाता है किन्तु ये प्रशासक बहुत कम लोग होते हैं। इसमें कार्य अधिक होने के कारण प्रबंध तथा प्रशासन में कठिनाई आती है।

(c.) साधनों का अविवेकपूर्ण वितरण → समाजवाद में साधनों के वितरण का आधार मनमाना होता है। अर्थशास्त्र में इस लागत-गणना का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं होता है।

(P.T.O)

Scanned with CamScanner

व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अभाव → समाजवाद में व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अभाव पाया जाता है। इस प्रकार उत्पादन, उपभोग, वितरण सभी क्षेत्रों में राज्य का अधिकार होता है। अतः व्यक्ति को उनके नियंत्रण में कोई स्थान नहीं होता है।

निर्णयों का अभाव → समाजवाद में नौकरशाही के कारण व्यापार का संचालन कुशलतापूर्वक नहीं हो पाता और वे निर्णय में भी अधिक कुशल नहीं होते।

उत्पादन - कार्य में प्रेरणा का अभाव → समाजवाद में व्यक्तिगत लाभ के उद्देश्य से कार्य नहीं किया जाता है। इसलिए इसमें उस प्रकार की प्रेरणा का अभाव पाया जाता है।

निष्कर्ष — पूँजीवाद या समाजवाद दोनों के गुण-दोष का अध्ययन करने के पश्चात् अब हमें यह निष्कर्ष निकालना है कि इन दोनों में श्रेष्ठ कौन है?

एक दृष्टि से समाजवाद श्रेष्ठ है और यही कारण है कि संसार में समाजवाद की तरफ झुकाव अधिक है। किन्तु पूँजीवाद को भी जड़ से समाप्त करना उचित नहीं है। अतः एक ऐसी व्यवस्था की स्थापना होनी चाहिए जिसमें इन दोनों व्यवस्था के गुण पाये जाते हों। भारत में इस समय ऐसी ही अर्थव्यवस्था की आवश्यकता है।

— o —

Scanned with CamScanner